अभियान

न्याय के लिए *उमड़ते सौ करोड़*

कमला भसीन

बोले रे बोले-हम सारे बोले
इंसाफ़ के लिए- हम सारे बोले
हिसाब के लिए- हम सारे बोले
तोड़ के ख़ामोशी- हम सारे बोले
ताक़त से प्यार नहीं, प्यार की ताक़त
हर महिला को न्याय चाहिए, हर हिंसा पर न्याय चाहिए

इस तरह के नारे लगाते हुए, गीत गाते हुए, नाचते हुए उमड़े थे 207 देशों में करोड़ों स्त्री-पुरुष और बच्चे। 14 फ़रवरी 2014 को ये सब लोग कह रहे थे- "बस्स, औरतों पर हिंसा अब और नहीं।"

भारत में हमने कहा पितृसत्तात्मक सोच सिर्फ़ एक अंधविश्वास है और इसे मिटाना ज़रूरी है। पितृसत्ता हमारे संविधान के ख़िलाफ़ है इसीलिए यह ग़ैर क़ानूनी भी है।

वन बिलियन राइज़िंग (ओबीआर) या उमड़ते सौ करोड़

2012 में दुनिया के अलग-अलग कोनों में एक वैश्विक अभियान शुरू हुआ, महिला हिंसा के ख़िलाफ़ चल रहे संघर्षों को और मज़बूत और गतिशील बनाने के लिए। यह कहने के लिए कि संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार हर तीन में से एक औरत पर हिंसा हो रही है, यानी पूरी दुनिया में 100 करोड़ औरतों पर हिंसा हो रही है। यह दुनिया का सबसे बड़ा और निरन्तर चल रहा युद्ध है। सबसे दुख और शर्म की बात यह है कि यह जंग परिवारों के अन्दर अधिक चल रही है।

उमड़ते सौ करोड़ का आह्वान था कि इस शर्मनाक और दर्दनाक हिंसा के ख़िलाफ़ 14 फरवरी 2013 को 100 करोड़ लोग उमड़ें और कहें, "बस्स, औरतों पर हिंसा अब और नहीं।"

इस अभियान की शुरूआत *वी डे* नामक एक नारीवादी संस्था ने की थी मगर अब यह सबका अभियान था और सब अपने तरीक़े से इसे कर रहे थे। *उमड़ते सौ करोड़ अभियान* 2013 बहुत सफल हुआ। मानव इतिहास में पहली बार 207 देशों में करोड़ों लोग किसी एक मुद्दे पर एक साथ होकर उमड़े।

उमड़ते सौ करोड़ अभियान 2014 ने इंसाफ़ का नारा बुलंद किया। पूरी दुनिया में इस हिंसा पर ख़ामोशी तोड़ने और न्याय की मांग की गई। इंसाफ़ देने और दिलवाने वाली संस्थाओं (जैसे पुलिस, न्यायालय, पंचायत, संसद) पर दबाव डाला गया, उन्हें चुनौतियां दी गईं। लोगों ने न्यायालयों के सामने प्रदर्शन किए। बंगलादेश में नारीवादी समूह उच्चतम न्यायालय के बाहर धरने के लिए उमड़े। जब पुलिस ने वहां मंच बनाने की इजाज़त नहीं दी तो

एक बड़े ट्रक को एक तरफ से खोलकर चलता फिरता मंच बनाया गया।

यूरोपियन यूनियन की संसद के सांसद उमड़े हिंसा के विरोध में। लंदन में ब्रिटिश संसद में भी ऐसा आयोजन हुआ। अमेरिका और फिलीपीन के कुछ शहरों में वहां के मेयर इस अभियान में शामिल हुए।

भारत में तो वैसे ही 16 दिसम्बर 2012 के सामूहिक बलात्कार के बाद से न्याय की मांग ज़ोरों से उठ रही थी। जनता की मांगों के फलस्वरूप भारत में हिंसा पर एक नया क़ानून बना और 16 दिसम्बर के बलात्कार के दोषियों का सज़ा दी गई। हालांकि हिंसा या बलात्कार तो ख़त्म नहीं हुए है, पर इस हिंसा पर ख़ामोशी अवश्य टूटी है। यह सोच भी खत्म हो रही है कि जिस औरत या लड़की का बलात्कार होता है उसकी इज़्ज़त लुट जाती है। हिंसा पर ख़ामोशी के टूटने और न्याय की मांग के कारण भारत में कई सत्ताधारी पुरुष जेलों में हैं।

न्याय की परिभाषा पर मंथन और वाद-विवाद

न्याय के लिए *उमड़ते सौ करोड़ अभियान* की वजह से जगह-जगह न्याय की अवधारणा पर मंथन व विवाद भी हुए। क्या है न्याय? किससे मांग रहे हैं हम न्याय? किस तरह का न्याय चाहते हैं हम? दिल्ली में *जागोरी* ने इस विषय पर गोष्ठी की। जब हम न्याय के बारे में बात करते हैं तो ज़्यादातर हम कोर्ट-कचहरी, पंचायत, वकील, जज, हमारी क़ानून व्यवस्था और पुलिस के बारे में सोचते हैं, और उनसे न्याय की उम्मीद करते हैं। पर जब मैं न्याय या इंसाफ़ के बारे में सोचती हूं तो मैं सिर्फ़ कोर्ट-कचहरी या पुलिस की बात नहीं करती। क़ानूनी न्याय ज़रूरी अवश्य है मगर न्याय के दूसरे अर्थ भी उतने ही अहम हैं जैसे- न्यायपूर्ण व्यवहार और रिश्ते, औचित्य। बिना भेदभाव के व्यवहार मेरे लिए इंसाफ़ की पहली शर्त है। परिवारों में हमें नेक और भेदभाव रहित व्यवहार मिलना भी इंसाफ़ की परिभाषा में आता है और ये इंसाफ़ हमें पुलिस और न्यायालय नहीं दिलवा सकते। इस इंसाफ़ को हर परिवार में पनपना होगा। अगर परिवारों में इंसाफ़ नहीं है तो इंसाफ़ पसंद पुलिसकर्मी और जज कहां से आएंगे? न्यायपूर्ण समाज बनाने की ज़िम्मेदारी हम सबकी है। सबसे पहले हर इन्सान को नेक और न्याय पसन्द बनना होगा। कोर्ट कचहरी वाला न्याय तो बाद में आता है, पर सबसे पहले न्यायपूर्ण व्यवहार जुल्म व हिंसा को रोकेगा।

कर्नाटक के गांवों की नारीवादी बहनों का न्याय

दिसम्बर 2013 में *एक्शन एड* बंगलुरू ने ज़मीन से जुड़ी न्याय और सम्मान दिलवाने वाली छः महिला कर्मियों को सम्मानित किया गया।

सायराबानो ने अपनी बेटी की शादी में गांव की तमाम विधवा औरतों को भी बुलाया। यह सम्मान और निमंत्रण उन्हें पहली बार मिला क्योंकि सायरा स्वयं विधवा हैं। जिन महिलाओं को अमंगली और मनहूस समझ कर हर खुशी के मौके से दूर रखा जाता था, उन्हें मेंहदी लगाई गई, चूड़ियां पहनाई गईं, ठीक वैसे जैसे 'सुहागिनों' के साथ किया गया। 'विधवाओं' को समाज के साथ सम्मान से जोड़ा गया, उन्हें समाज में समाहित किया गया।

न्याय की करुणामयी परिभाषाएं

एक और ग्रामीणकर्मी ज्योति ने अपने गांव की 'विधवाओं' को पंचायत से अधिकार व सम्मान दिलवाया। ये भी तो

न्याय के नमूने हैं और कोर्ट में मिलने वाले न्याय से कम महत्वपूर्ण नहीं।

न्यायपालिकाएं बलात्कार की शिकार महिलाओं को न्याय दें उससे पहले उन्हें स्वीकार करके, उनका सम्मान और सहायता करके समाज उन्हें न्याय दे सकता है। अपने समाज से सम्मान मिलना हमारी गरिमा, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास के लिए आवश्यक है और यह भी इंसाफ़ है। इसी प्रकार शादी-शुदा बेटियों के मां-बाप उनके लिए अपने घरों के दरवाज़े खोलकर उन्हें अन्याय का शिकार होने से बचा सकते हैं। पहले उन्हें दहेज के लिए ससुराल में प्रताड़ित होने देना और बाद में न्याय की पुकार करना मुझे न्यायोचित नहीं लगता।

न्याय की कुछ अवधारणाएं प्रतिशोध या बदले की भावना पर आधारित हैं। बदले की भावना पर आधारित न्याय उचित न्याय नहीं है। इस प्रकार के न्याय के बारे में गांधी जी ने कहा था "आंख के बदले आंख, हम सबको अंधा बना देगी।" उदाहरण के तौर पर बलात्कार के लिए मृत्युदंड या बलात्कारी के लिंग को काटने की मांग करना भी बदले की भावना पर आधारित है। इसलिए अधिकतर नारीवादी मृत्यु दंड के ख़िलाफ़ हैं। एक सभ्य समाज में मृत्युदंड का प्रावधान नहीं होना चाहिए, इसलिए दुनिया के सौ से अधिक देशों में मृत्युदंड को खत्म कर दिया गया है। मेरे लिए न्याय है एक गहरी समझ बनाना, नेक व्यवहार और औचित्य, औरों तक पहुंचने की कोशिश, भेदभाव का तिरस्कार।

अंगुलीमाल के लिए बुद्ध का न्याय

न्याय की जो कहानी मुझे अच्छी लगती है, जो मुझे प्रेरणा व उम्मीद देती है वो है अंगुलीमाल और महात्मा बुद्ध की कहानी। अंगुलीमाल एक हत्यारा था। वह समाज द्वारा निष्कासित, क्रोधी व बदले के लिए हत्या करने वाला व्यक्ति था। हत्या करने के बाद वह मृत व्यक्ति की उंगली काटकर गले में पहन लेता था ताकि लोग उसके दैत्य रूप को देखकर भयभीत हों। चूंकि वह उंगलियों की माला पहनता था इसलिए उसका नाम पड़ा अंगुलीमाल। कहते हैं वह दलित था और दलितों के शोषण का बदला हत्याएं करके और हत्याओं द्वारा लोगों को डराकर अपनी सत्ता जमा कर लेना चाहता था। बुद्ध अकेले थे जब वे उसे जंगल में मिले, मगर वे यह जानते हुए भी अंगुलीमाल खूंखार है वे उससे भयभीत नहीं हुए। अंगुलीमाल ने अपना खूंखार रूप दिखाकर बुद्ध को मारने की धमकी दी। बुद्ध तनिक भी विचलित नहीं हुए। उनके चेहरे और व्यवहार से वही करुणा निकलती रही जो उनका स्वभाव था। अंगुलमाल बुद्ध की करुणा, निडरता, प्रेमभाव देखकर पिघलता गया। अंत में बुद्ध के बुलाने पर उनका शिष्य और बौध भिक्षु बनकर उसने लोगों की बहुत सेवा की।

ईव एन्सलर कहती हैं कि नेक संबंध बनाना न्याय है। अन्याय पीड़ित महिला जब अपनी बात खुलकर कह पाती है, जब लोग उसे समझ-बूझ से सुनते हैं, उसकी बात पर यकीन करते हैं, उसकी सहायता करते हैं तो उसे न्याय मिल गया, ऐसा उनका मानना है।

आज हम बहुत सारे लोग परिवर्तनकारी न्याय चाहते हैं यानी वह न्याय जो जुर्म से जुड़े हर व्यक्ति को बदले, बेहतर बनाए। न्याय चाहने व करते समय हमें इन सब बातों की फ़िक्र होनी चाहिए।

- पीड़ित की सुरक्षा, बेहतरी, उसके दुःख और पीड़ा का निवारण, और उसकी कर्मशीलता।
- जुर्म करने वालों की जवाबदारी व उनके अन्दर परिवर्तन।
- समुदाय की प्रतिक्रिया व उसकी ज़िम्मेदारी व जवाबदारी।
- जो सामाजिक ढांचे व परिस्थितियां जुर्म को बढ़ावा देती हैं उनमें बदलाव।

ये सब होगा परिवर्तनकारी न्याय जो सिर्फ़ हमारे जेल नहीं भरेगा, सिर्फ़ हमारी बदले की भावना को नहीं भड़कायेगा बल्कि हमें अन्याय से न्याय की ओर ले जाएगा, अंधकार से रोशनी की ओर ले जाएगा।

मैं मानती हूं कि लोग पश्चाताप और प्रायश्चित कर सकते हैं। बड़े से बड़े गुनहगार भी बदल सकते हैं। निर्भया बलात्कार मामले में जब आरोपियों को सजा मिली तो इस बात पर तो मैं खुश हुई कि इंसाफ़ काफ़ी जल्दी हुआ मगर सजा-ए-मौत की वजह से मुझे दुःख हुआ। मैं यह मानती हूं कि वे पुरुष हिंसक व बलात्कारी पैदा नहीं हुए थे। समाज का भी हाथ होता है लड़कों और पुरुषों को हिंसक बनाने में। गरीबी, निराशा, शोषण और उत्पीड़न भी ज़िम्मेदार होता है इस व्यवहार के लिए। उम्र कैद उन्हें पश्चाताप और प्रायश्चित करने के अवसर दे सकती थी।

ज्ञानियों से मैंने तो यही सीखा है कि हिंसा का जवाब हिंसा नहीं हो सकता। हिंसा का जवाब अन्ततः प्यार ही होना चाहिए। प्यार की शक्ति से दुश्मनी, कलह, द्वन्द को सुलह में परिवर्तित किया जा सकता है।

उमड़ते सौ करोड़ अभियान का भी यही संदेश है। तभी तो हम *वैलेन्टाईन दिवस* पर उमड़ते हैं और सत्ता के प्यार को, प्यार की सत्ता से जीतना चाहते हैं। प्रेम ही इस हिंसक समाज की मरहम है वही 'हीलिंग टच' या आरोग्य का स्पर्श है।

कमला भसीन *नारीवादी लेखिका व कार्यकर्ता हैं।*